विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध–प्रस्ताव

शोध–शीर्षक

"अम्बेडकर विचारधाराओं का अनुसूचित जातियों के समेकित विकास में भूमिका" : बिहार के समस्तीपुर जिला के भटौरा गाँव पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

शोध अन्वेषक

फूलकांत सिंह

पैट रौल न० –22190111

2021–2022

Scanned with OKEN Scanner

शोध–शीर्षक

(अम्बेडकर विचारधाराओं का अनुसूचित जातियों के समेकित विकास में भूमिका :समस्तीपुर जिला के भटौरा गाँव पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

परिचय (Introduction)

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी एक महान समाज सुधारक थे। बाबा साहेब एक ऐसे समाज का विकास करना चाहते थे, जिसमें सामानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व का साम्रज्य हो। बाबा साहेब लोगों में सामाजिक चेतना पैदा करना चाहते थे लेकिन सामाजिक विकास एवं सामाजिक समस्याओं के सुधार के लिए वे सामाजिक चेतना को अति आवश्यक मानते थे। बाबा साहब के अनुसार सामाजिक चेतना ही व्यक्तियों के अधिकारी का रक्षक है। डॉं अम्बेडकर द्वारा किए गए सामाजिक संघर्ष का उद्धेश्य उपेक्षित वर्ग पर होने वाने अत्याचारों को खत्म करना था। परन्तु बाबा साहब चाहते थे कि समाज के सभी वर्गो का सभी क्षेत्रों में समान स्थान होना चाहिए और सभी वर्ग के लोगों को जीवन में ऊपर उठने के समान अवसर दिए जाए। इन सभी कार्यो के लिए अम्बेडकर साहब ने कड़ी मेहनत व लगन से कार्य किया।

भारत में अनुसूचित जाति की अवधारणा जाति व्यवस्था के संस्तरण तथा अस्पृश्यता की अवधारणों से **घनिष्ठ** रूप से संबंधित है। अस्पृश्यता का संबंध हिन्दु जाति–व्यवस्था के अंदर पवित्रता और अपवित्रता की धारणा को व्यक्ति के जन्म से संबंधित मान लेने से है। इसी कारण इन जातियों पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार होते रहे। हिन्दु समाज का अधिकांश भाग अनुसूचित जातियों की परम्परागत निर्योग्यताओं को अपने समाज के लिए एक कलंक के रूप में देखता है। इसके बाद भी यह सच है कि धर्म को आड़ में फलने फूलने वाली परम्पराओं की जड़े इतनी गहरी

Phulkant Singh

Reviewed
.3.24
Supervisor

Scanned with OKEN Scanner

हो जाती है कि उन्हे समूल नष्ट करने में कुछ समय लगता है। यही कारण है कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनुसूचित जातियों की समस्याएँ आज भी काफी गंभीर बनी हुई है।

अम्बेडकर भारतीय संविधान के सबसे प्रमुख निर्माताओं में से एक है। उन्होनें यह सुनिश्चत किया कि समाज में दलित वर्ग के लोगों के लिए विशेष प्रावधान हो। अम्बेडकर ने दलितों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और उन्हें संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। बाबा साहब के कारण ही 'निचली जाति' के कई लोग अपने अधिकारों की माँग करने लगें। बाबा साहेब सदैव यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि देश के ऐतिहासिक रूप से वंचित वर्गो को विभिन्न संस्थानों में प्रतिनिधित्व मिले। उन्होने उनकी शिक्षा के साथ–साथ आर्थिक विकास के लिए भी काम किया। अम्बेडकर जी ने बहिष्कृत भारत, समानता जनता और मूकनायक जैसी पत्रिकाओं के माधयम से दलितों के जीवन को आगे बढ़ाया। उन्होने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की जो दलितों के विकास की वकालत करता है।

अम्बेडकर जी ने 1927 में अस्पृश्यता के खिलाप एक आंदोलन का नेतृत्व किया। यहाँ उन्होने अस्पृश्यता के प्रचार के लिए हिन्दु धार्मिक ग्रंथों की आलोचना की। उन्होने 25 दिसम्बर 1927 को कई दलितों की मनुस्मृति की प्रतिया जलाने के लिए प्रेरित किया, जो जाति आधारित भेदभाव और अस्पृश्यता को उचित ठहराती है। इन सबके अलावा अम्बेडकर ने 1932 में महात्मा गाँधी से साथ पुना समझौता पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दलितों के लिए सीटों के आरक्षण की सुविधा मिले। इससे पहले 1930 में उन्होनें लगभग 1500 दलितों को कालाराम मंदिर में प्रवेश कराया ताकि उन्हें पहली बार भगवान के दर्शन कराने में मदद मिल सके।

Ramya 4.8.24 Supervisor

Phulkant Singh

Scanned with OKEN Scanner

बाबा साहब जाति के मुद्दे को एक राजनीतिक समस्या के रूप में देखते थे, वहीं गाँधी जी इसे एक सामाजिक मुद्दा मानते थे। अम्बेडकर जाति व्यवस्था को पुरी तरह से समाप्त करना चाहते थे। बाबा साहेब की एक प्रमुख कृति "द एनिहिलेशन ऑफ कास्ट" है, जिनमे अम्बेडकर ने दलितों की दयनीय स्थिति एवं उनके प्रमुख समस्याओं का वर्णन किया है। अम्बेडकर जाति व्यवस्था को खारिज कर दिया और और बताया कि यह कैसे सामाजिक गतिशीलता की कमी लंबे समय से अर्थव्यवस्था की नकरात्मक रूप से लाभ पहुंचाती है । उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हिन्दूओं में "जाति की चेतना नहीं है बल्कि जाति की चेतना है।" अम्बेडकर इस बारे में भी बात करते हैं कि कैसे चतुवर्ण व्यवस्था दलितों के लिए घातक रही है,उन्हें उनके राजनितिक , शारीरिक और शैक्षिक अधिकारों से वंचित करके रखा ।

अम्बेडकर ने प्रचलित जाति व्यवस्था को ठीक करने के लिए दो उपाय बतायें जिनमें अंतरजातीय विवाह और धार्मिक ग्रंथों का खंडन, उन्होन इस बात की वाकालात की कि निचली जातियों के लोग समाज के अन्य सदस्यों के साथ समानता तभी हासिल कर सकते हैं जब वे आत्म–सम्मान का निमार्ण करें। अम्बेडकर ने सुनिश्चित किया कि बहिश्कृत समूहों का पूर्ण समावेश हो और किसी भी आधार पर भेदभाव का सर्मथन नहीं हो ।

सन 1947 में स्वतंत्रता मिलने पर भारत का नया संविधान बनाना आरंभ हुआ तो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 341 के विभिन्न प्रावधानों के अंर्तगत राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया कि वह विभिन्न **प्रदेशों** के राज्यपालो से सलाह करके अनुसूची तैयार करे जिन्हें समाजिक, धार्मिक और आर्थिक आधार पर सभी तरह के अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है ।

Phulkant singh

Ravi 14.3.24 Supervisor

Scanned with OKEN Scanner

भारत में आज अनुसूचित जातियों की संख्या 542 है तथा की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या का प्रतिशत 16.2 है। इनके समुचित विकास के लिए संविधान के विभिन्न अनुच्छेद में इन्हें विशेश रूप से छूट प्रदान की गई है । जिनमें बाबा साहब का प्रमुख योगदान रहा है।

अध्ययन की समस्या :

प्रस्तुत शोध कार्य "अम्बेडकर विचारधारों का अनुसूचित जातियों के समेकित विकास में भूमिका" पर केन्द्रित है। यह एक जटिल एवं व्यापक क्षेत्र का विषय है। वर्तमान समय में अनुसूचित जातियों के सामने अनेक समस्या देखने को मिल रही है। जिनमें समाजिक विभेद की समस्या, उच्च जातियों द्वारा शोषण, हरिजन महाजनो क शोषण , आन्तरिक असमानता की समस्या, अर्न्तजातिय तनाव की समस्या, अशिक्षा तथा राजनीतिक गुटबन्दी की समस्या आदि। प्रस्तुत शोध अध्ययन के दौरान अम्बेडकर के विचारधाराओ का इन सभी प्रमुख समस्याओं के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा। तथा यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि उनके विभिन्न विचारधाराओ का वर्तमान परिस्थितियों में अनुसूचित जातियो के समेकित विकास में कितनी भूमिका रही है।

अध्ययन का उद्धेश्यः–

प्रस्तुत शोाघ "अम्बेडकर विचारधाराओं का अनुसूचित जातियों के समेकित विकास में भूमिका में निम्नलिखित उद्धेश्यों को निर्धारित किया गया है।

1. उत्तरदातों का सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना
2. अम्बेडकर विचारधाराओं का आकलन करना।
3. वर्त्तमान परिस्थितियों में अनुसूचित जातियों का आकलन करना।

Ravi 14.3.24 Supervisor

Phulkant Singh

Scanned with OKEN Scanner

4. अम्बेड़कर विचारधराओं का अनुसूचित जाति के सामाजिक विकास में योगदान।
5. आरक्षण का अनुसूचित जातियों के सामाजिक विकास में योगदान का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न :–

1. क्या वर्त्तमान परिस्थिति में अम्बेडकर विचारधारओं के प्रति अनुसूचित समाज में अभाव पाया जाता है?
2. क्या आरक्षण से अनुसूचित जातियों का सामाजिक विकास हो रहा है?
3. क्या वर्त्तमान परिस्थिति में भी समाज में अनुसूचित जातियों में असमानता की समस्या नजर आती है?
4. क्या अम्बेडकर के विभिन्न विचारधाराओं का समाज पर प्रभाव पड़ा है?

साहित्य समीक्षा :–

साहित्य का पुनरावलोकन किसी भी प्रकार के शोध का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। क्योंकि यह शोध करने वाले को कार्य करने की दिशा प्रदान करता है और शोधकर्त्तो को विषय से संबंधित तथ्य को गहराई से अध्ययन करने में मदद करता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व अध्ययनों को व्यवस्थित किया गया है। प्रस्तुत शोध "अम्बेडकर विचारधाराओं को अनुसूचित जातियों के समेकित विकास से भूमिका" के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण साहित्य समीक्षा निम्नलिखित है।

1. कुमार एट एल (2014) ने तमिलनाडु के वेल्लोर जिले में चमड़ा टेनरियों में काम करने वाले अनुसूचित जाति के श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों को अध्ययन किया है। उन्होंने बताया

Ravi 4.3.24 Supervisor

Phulkant singh

Scanned with OKEN Scanner

कि ये कर्मचारी अन्य क्षेत्रों के श्रमिकों से वंचित है। इन श्रमिकों को चमड़ा उद्योग में अपनी स्वास्थ्य स्थिति और स्वास्थ्य संबंधी सुरक्षा उपयों में सुधार करने की आवश्यकता है।

2. रूक्शाना और आलय (2014) ''पश्चिमी भारत में अनुसूचित जातियों के बीच साक्षरता'' पर अध्ययन किया। उन्होने पाया कि अनुसूचित जातियों में गैर अनुसूचित जातियों के तुलना में साक्षरता कम पाई जाती है। उन्होंने इसका मुख्य कारण सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़ेपन बताया। इसके लिए उन्होने सुक्षाव दिया कि सरकार को कम साक्षर क्षेत्रों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
3. कुमारी मधु (2013) ''बाबा साहब अम्बेडकर एक चिन्तन'' इन्होंने अम्बेडकर साहब को एक सामाजिक क्रांतिकारी के रूप में दर्शाया है। इसमें बताया गया कि समाज में उन्होने दलितों के उद्धार व अन्य प्रकार की सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के लिए अथक प्रयास किये जिसमें काफी हद तक सफल रहे। इन्होने अम्बेडकर द्वारा किये गये विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं धर्म परिवर्तन संबंधी विभिन्न घटनाओं का चर्चा की।
4. रतु नानक चन्द (2005) ने अपनी पुस्तक ''बाबा साहब डा० अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतिया'' में लेखक द्वारा बाबा साहब के बचपन, शिक्षा, उनके द्वारा किए गए आंदोलनों, उनके दलित समाज के प्रति सोच एवं विभिन्न स्मृतियों का वर्णन किया है।
5. गोल्डी एवं जॉर्स (2006) ने बताया कि अभी भी भारत में छुआछुत और जातिगत भेदभाव प्रचलित है। उन्हे मानवीय गरिमा और उनके अधिकारों से वंचित किया जाता है, जिसमें भूमि, पानी, और खादानों, जलीय संसाधनों आदि जैसे संसाधनों में उचित हिस्सेधारी शामिल है। ऐतिहासिक रूप से लंबे समय से सताए गए मानवतावादियों में से एक थे जिन्हें अधिकारों से वंचित किया गया। वर्तमान समय में अनुसूचित

Rows 14.3.24 Supervisor

Phulkant Singh

Scanned with OKEN Scanner

जाति को वह शक्ति और दर्जा नहीं मिल रहा है जिसके वे हकदार है।

शोध पद्धतिशास्त्र :–

समाजिक अनुसंधान में तथ्य संकलन के लिए पद्धतियों का उपयोग शोध को महत्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक रूप प्रदान करता है। इसमें शोध डिजाईन का चयन करना, डाटा एकत्रित करना और उनका विश्लेशण करना तथा निश्कर्श निकालना भाामिल है। प्रस्तुत शोध का प्रारूप वर्णात्मक शोध पारूप पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत शोध ''अम्बेडकर विचारधाराओं का अनुसूचित जातियों के समेकित विकास में भूमिका'' से संबंधित है। शोध हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में **समस्तीपुर जिला के भटौरा गाँव** का चयन किय है। 2011 की जनगणना के अनुसार भटौरा गाँव का औसत लिंगानुपात 931 है। भटौरा गाँव में पुरूष साक्षरता दर 73.56 है, जबकि महिला साक्षरता दर 45.59 है। भटौरा गाँव में कुल अनुसूचित जातियों की संख्या 771 है जिनमें 379 पुरूष हैं, जबकि 392 महिला की जनसंख्या है।

तथ्य संकलनः–

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए प्राथामिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोंतो का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्त्रोत का प्राविधिक आधार साक्षात्कार, अनुसूची व अवलोकन का प्रयोग किया जायेगा। द्वितियक स्त्रोत क अंतर्गत सरकारी प्रलेख और सांख्यकी, इंटरनेट, उपलब्ध प्रलेखन सामग्री, पत्र–पत्रिका एवं पूर्व के शोध का प्रयोग किया जायेगा।

Ravi 18.3.24 Supervisor

Phulkant Singh

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन व विश्लेशण :–

तथ्यों से अर्थपूर्ण परिणाम व संबंध का आकलन करने हेतु तथ्यों को समजातीय समूहों में वर्गीकरण के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा। तथ्यों को वर्गीकरण सम्पूर्णता की प्रकृति के अनुसार दो प्रकार का हो सकता है यथा–गुणों के अनुसार बर्गीकरण व समान्य अभिलक्ष्णों के आधार पर समंकों का वर्णत्मक रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है। वर्ग अंतराल के अनुसार–वर्णात्मक अभिलक्ष्णों की बजाय संख्यात्मक अभिलक्षण मात्रात्मक प्रघटना को अभिव्यक्त करता है, जिसका विश्लेशण संख्यिकी ईकाईयों के माध्यम से किया जा सकता है। इस प्रकार के तथ्यों को चरों की सांख्यकी के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है व वर्ग अंतराल के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

अध्ययन का सामग्र व निदर्शन चचन :–

उद्धेश्य पूर्ण निदर्शन के द्वारा सिमस्तीपुर जिला के भटौरा गाँव का चयन किया गया है। भटौरा गाँव में कुल अनुसूचित जातियों की संख्या 771 है। स्तरीकृत दैव निदर्शन प्रणाली के अधार पर कुल अनुसूचित संख्या में से 100 पुरूष अनुसूचित तथा 100 महिला अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा। इस प्रकार कुल 200 उत्तरदाताओं के ऊपर सम्पूर्ण सवेक्षण संचालित किया जायेगा और साक्षत्कार अनुसूचित के माध्यय से उनसे अध्ययन से संबंधित प्रश्नों पर तथ्यों के रूप में इनकी प्रतिक्रियाओं संकलित की जायेगी।

शोध की प्रासंगिता और अपेक्षित निष्कर्ष :–

इस दिशा में यह शोध अनुसंधान विविध समस्या पर सूक्ष्म और गहन ज्ञान प्रदान करता है, तथा सामाजिक विकास में सहायक है। यह शोध होने से सामाजिक समस्या के निदान और निवाकरण में सहायक है। प्रस्तुत शोध

Ravy 4.3.24 Supervisor

Phulkant singh

Scanned with OKEN Scanner

समाजशास्त्र एवं अन्य अनुशासन, राजनीतिशास्त्र में वर्तमान शोध का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास और मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है।

प्रस्तावित अध्यायीकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य के तात्कालिक अध्याय निम्नलिखित होंगें।

1. भूमिका।
2. साहित्य का सिंहावलोकन।
3. अध्ययन क्षेत्र।
4. शोध पद्धतिशास्त्र।
5. उत्तरदाताओं के सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृश्ठभूमि।
6. अम्बेडकर विचारधारओं का अनुसूचित जाति के सामाजिक विकास में योगदान।
7. आरक्षण का अनुसूचित जातियों के सामाजिक विकास में योगदान।
8. सारांश एवं निष्कर्ष ।.
9. सुझाव

परिशिष्ट :–

1. संदर्भग्रथ
2. साक्षत्कार अनुसूची

Ravi 4.8.24
Supervisor

Phulkant Singh

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ ग्रंथ

1. सागर एच० एल० (2007) डाँ अम्बेडकर संक्षित्य जीवन का परिचय सागर प्रकाशन मैनपुरी
2. सर्वेश (2007) "अम्वेडकर के विचार", समता साहित्य सदन नई दिल्ली।
3. कुमार एट एल (2019) तमिलनाडु के अनुसूचित जातियों का अध्ययन। Britannica Readv, Encyciopedia, New Delhi
4. रूक्शाना और आलम (2019) पि चमी अनुसूचित जातियों के बीच साक्षरता।, विश्वविद्यालय मद्रास, चेन्नई।
5. कुमारी मधु (2013) बाबा साहब अम्बेड्कर एक चिन्तन, मालिक एण्ड कंम्पनी जयपुर।
6. रतु नानक चन्द (2005) बाबा साहब अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतियाँ सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. गोल्डी एम० जार्ज (2006) समता के समर्थ डाँ अम्बेडकर नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली।
8. मूल बसन्त (1994) राश्ट्रीय जीवन चरित्र डाँ बाबा साहब अम्बेडकर नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली।
9. शंकर गोरी एवं भाटे सुरे ाचंन्द्र (1983) "सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी" स्टुडेंटस फ्रेंण्डस एण्ड कंपनी, हिन्दु विश्वविद्यालय मार्ग, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।
10. टाहुजा राम (2003) : सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
11. सिंह, गोपी रमण प्रसाद (2013–2014) : सामाजिक अनुसंधान एवं सामाजिक सर्वेक्षण, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस आगरा, उत्तर प्रदे ।।

Rewy 14.3.24 Supervisor

Phulvant singh

Scanned with OKEN Scanner